Original Research Paper Sanskrit

श्रीरामाश्वमेधीयं महाकाव्य में राजतंत्र

निशा कुमारी

पीएच०डी० शोधार्थी संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक–124001 (हरियाणा)

KEYWORDS :

प्राचीनकाल से ही भारत में कोई औपचारिक राजनीतिक दर्शन नहीं रहा है। राज्य–व्यवस्था–शास्त्र पर अनेक प्रसिद्ध ग्रंथ अवश्य उपलब्ध होते हैं दण्डनीति अर्थात् शक्ति का शासन अपनी राजनीति अर्थात् राजा धरण एक व्यावहारिक विषय रहा है। राज्य व्यवस्था पर लिखित ग्रंथ राज्य संगठन तथा शासकीय कार्यों के संचालन सम्बन्ध निर्देश देते हैं। इनमें कौटिल्य का अर्थशास्त्र, महाभारत का शान्ति पर्व, रामायण, मनुस्मृति कमन्दक का नीतिसार, सोमदेव सूरी का 'नीतिवाक्याम' आदि ग्रंथ महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें राजाधिकार, दण्ड–विधान, राज्य शासन व्यवस्था, राजा के कर्त्तव्यों आदि का चित्रण किया गया है। इनमें राजा के अधिकारों के साथ–साथ जनमत पर अधिक बल दिया गया है। ''राम के आख्यान में जो उत्तरकालीन हिन्दूशासकों के लिए एक आदर्श रूप में स्वीकार किया गया था, अधिनायक ने अपनी प्रिय पत्नी सीता को, यद्यपि वह स्वयं उसकी निरपराधित पर विश्वास करते थे, यह समाचार सुनकर वनवास दे दिया कि प्रजा उसके सतीत्व पर शंकित है तथा उन्हें यह भय था कि कहीं महल में उसकी उपस्थिति राज्य पर कोई दुर्भाग्य न ला दे।'' प्रस्तुत महाकाव्य 'श्रीरामाश्वमेधीयं' मेंभी इस प्रसंग का उल्लेख किया गया है। राजा राम अपनी पत्नीसीता के प्रति प्रेम भाव रखते हुए भी प्रजा को ध्यान में रखकर सीता को वनवास भोजने का विचार करने पर मजबूर होते हैं। एक राजा होते हुए भी श्रीराम अपनी पत्नी सीता के लिए प्रजा के समक्ष विरोध नहीं कर पाए। अंततः सीता स्वयंही राम की विवशता को समझकर राजमहल छोड़कर वन में जाने के लिए तैयार हो जाती है। सीता के वन में जाने के बाद राम अपनी विवशता एवंशक्तिहीनता के बारे में सोचते हैं कि –

''लोकस्य शास्तेति जगत्प्रसिद्धिं गतोऽपि शास्यो न किमस्मि लोकैः।
नो चेद् विवासाय कथं प्रियाया लोकापवादैर्विवशीकृतोऽहम्।।31।।''[2]

अर्थात् मैं लोक का शासक हूँ और सम्राटा के रूप में जगत् प्रसिद्ध हूँ परन्तु क्या मैं वास्तव में लोक द्वारा शासित नहीं हूँ, यदि नहीं तो लोकमत ने मुझे सीता के वनवास हेतु कैसे विवश कर दिया?

इससे स्पष्ट होता है कि कवि द्वारा वर्णित राजतंत्र में राजा के अधिकारों के साथ–साथ जनमत का भी अपना महत्त्व रहा है।

प्रस्तुत महाकाव्य में कवि ने राजतंत्र में राजा और प्रजा की स्थिति को स्पष्टतया दर्शाया है। इसमें राजा के अधिकार, कर्त्तव्यों का उल्लेख है। इसके साथ ही प्रजा की राजतंत्र में अहम् भूमिका का भी उल्लेख किया है। कवि द्वारा वर्णित राजतंत्र में राजा सर्वोपरि होते हुए भी जनमत अथवा लोकमत के विपरीत नहीं जा सकता। इसमें राजा और प्रजा दोनों को ही एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी दर्शाया है।

श्रीरामश्वमेधीयं महाकाव्य के प्रथम सर्ग में कवि ने राजा रामचन्द्र के दरबार का चित्रण किया है जो एक आदर्श राजा के गुणों से अलंकृत है –

''श्रीमान् सर्वगुणोपेते समये समलंङ्कृतः।
अनुयातः सभासद्भिर्मन्त्रिभिश्च प्रसन्नधीः।।
तूर्यवादित्रनिः स्वानैर्मङ्गलाचारतत्परैः।
सुवासिनीजनैर्गीतं गानं शृण्वन् सुमङ्गलम्।।
भ्रातृभिः सहितो रामो भार्यया सीतया सह।
प्रजानां जयघोषेण कीर्त्यमानपराक्रमः।।''[3]

अर्थात् सर्वगुणयुक्त समय में राजोचित वेशभूषा धारण कर प्रसन्न मुख मुद्रायुक्त श्रीमान राजा रामचन्द्र सभासद् और मंत्रिगण को साथ लेकर तुरही और मृदंग की ध्वनि के साथ मांगलिक गीत गायिका सुवासिनी जनों के गीत सुनते हुए अपने तीनों भ्राताओं और पत्नी महारानी सीता के साथ प्रजाजन के जयघोष एवं अपनी वीरगाथा सुनते हुए राज्य सभागार में प्रविष्ट हुए। इसमें कवि ने राजतंत्र में राजा के दरबार का चित्रण किया है। राजा राम के दरबार में प्रजा के बीच राजा की छवि आदर एवं सम्मान सहित है। ना कि भय सहित। इसमं राजा राम को अपने परिवार के साथ दरबार में आते हुए दर्शाया है। यहाँ कवि का अभिप्राय है कि एक राजा रूप में श्रीराम समन्वय एवं सहयोग की भावना को साथ लिए हुए। वे वैयक्तिक जीवन में सार्वभौमिकता को लागू करते हैं।

वनवास से लौटने के पश्चात् राजा श्रीरामचन्द्र द्वारा सिंहासन पर बैठने का अवसर पर कुलगुरू वशिष्ट व राजा राम को एक राजा के कर्त्तव्यों के प्रति सचेत करते हैं कि –

सर्वसद्गुणसंयुक्तैः पूर्वजैरभिरक्षिते।
राज्यासनेऽभिषिक्तस्त्वं धर्मकोषस्य गुप्तये।।
भ्रातृभिर्बन्धुभिः सार्धं भुञ्जन कौटम्बिकं सुखम्।
साधि धर्मेण सत्रीत्या मेदिनीं सागराम्बराम्।।
विनेता सर्वदुष्टानां नेता निखिलभूभुजाम्।
प्रणेता धर्मनीतेश्च मर्यादापुरुषोत्तमः।।''[4]

अर्थात् लोकोत्तरचरितयुक्त प्रजापालन में निरन्तर लगन कीर्ति विज्ञान वीरता आदि गुणयुक्त तुम्हारे पूर्वजों से संरक्षित इस राज सिंहासन पर प्रजा ने धर्म रूपी निधी की रक्षा के लिए तुम्हें बैठाया है। अपने परिजनों के साथ कौटम्बिक सुखों का उपभोग करते हुए तुम धर्म और नीति से राज्य पर शासन करो। सभी दुष्टों को शासित करो सभी राजाओं के नायक बनो। मर्यादापुरुषोत्तम के रूप में धर्म और नीति के मार्ग को स्थिर करो।

इसमें गुरु वशिष्ठ राजा राम को परिवार, प्रजा, धर्म, नीति सभी को एक साथ लेकर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। इसमें राजतंत्र की विशेषताओं को दर्शाते हुए राजा के अधिकार एवं कर्त्तव्यों का भी उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत काव्य में राजतंत्र में निहित लोकतांत्रिक मूल्यों को दर्शाया गया है जिसमें राजा और प्रजा दोनों के अधिकारों एवं कर्त्तव्यों का उल्लेख है। प्रस्तुत काव्य में वर्णित राजतंत्र में शक्ति का केंद्रीकरण केवल राजा तक सीमित नहीं है बल्कि राजा को प्रजा का रक्षक दर्शाया गया है।

प्रस्तुत काव्य में कवि ने राजतंत्र का चित्रण करते हुए रामराज्य की सुख–समृद्धि और व्यवस्था को दर्शाया है। एक राजा को अपने राज्य में केवल मनुष्यों का ही नहीं बल्कि उसके राज्य के पशु–पक्षियों का भी ध्यान रखना चाहिए। राज्य का पशुधन उसकी अर्थ व्यवस्था का मूल आधार होता है।

''मूलमर्थव्यवस्थाया यज्ञानां साधनं शुचि।
स्रोतो दुगधघृतादीनां रक्ष्यं राष्ट्रस्य गोधनम्।।
अश्वा गजा बलीवर्दा अन्ये चापि चतुष्पदाः।
वर्जनीया वृथाश्रान्त्या पीडनाया न कर्हिचित्।।''[5]

अर्थात् अर्थ व्यवस्था का मूल, यज्ञों का पवित्र साधन, दूध दही घी का निर्झर राष्ट्र का गोधन रक्षणीय है। घोड़ा, हाथी, बैल और इतर चौपाये जीवों को व्यर्थ कष्ट देना वर्जित है और पीड़ा पहुँचाना भी। इसमें कवि ने राजा राम के घोषणा–पत्र में गौरक्षा की महत्ता पर बल दिया है। भारतीय संस्कृति में गाय सदैव ही पूजनीय रही है। प्राचीन काल से ही गाय अर्थ व्यवस्था का अभिन्न अंग रही है। भारत एक कृषि प्रधान देश रहा है। कृषि में गाय, उसके बछड़े, दूध, दही, घी और यहाँ तक कि खाद के रूप में गोबर भी उपयोगी रहा है।

गाय की महत्ता को ध्यान में रखते हुए कवि ने राजा राम के घोषणापत्र में गाय की रक्षा का उल्लेख किया है। भारतीय संस्कृति में 'अहिंसा परमोध' माना गया है। प्रस्तुत काव्य में कवि ने भारतीय संस्कृति में इसी मूलमंत्र को भी स्थापित किया है। उन्होंने केवल गाय ही नहीं अपितु अन्य पशुओं की रक्षा करना भी राजा का कर्त्तव्य निर्धारित किया है। इस प्रकार से राजा राम के घोषणा पत्र के माध्यम से सबल एवं महान् राजतंत्र की विशेषताओं को पाठकों के समक्ष रखा है।

इसके साथ ही कवि ने राजा रामचन्द्र के घोषणापत्र में एक राजा के कर्त्तव्यों को निर्धारित करने के साथ–साथ राज्य में लागू होने वाले नियम–कानूनों कोा भी दर्शाया है। किसी भी राज्य के नियम–कानून ही राजतंत्र है। किसी भी राज्य के नियम–कानून ही राजतंत्र में सुशासन एवं सुव्यवस्था के परिचायक होते हैं। जैसे –

''मूल गृहस्थधर्मस्य रतिपुत्रफलप्रदाः।
अर्धाङ्गं पुरुषस्यैता माननीयाः सदा स्त्रियः।।
पुत्र्यो भगिन्य पत्न्यश्च मातरश्चाद्यशिक्षिकाः।
देव्यः पुण्यमास्तासामानृण्यं को नु गच्छति।।''[6]

अर्थात् गृहस्थ धर्म का मूल आधार रति और सन्तान का फल देने वाली पुरुष की अर्धांगिणी स्त्रियों के सम्मान की सदा रक्षा करें। पुत्री, बहन, पत्नी, माता और आदी शिक्षिका के गौरव को वहन करने वाली स्त्रियों ऋण से कोई मुक्त नहीं हो सकता।

इसमें नारी की महानता को दर्शाते हुए उसका सम्मान करना महत्त्वपूर्ण माना है। समाज में स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। किसी भी समाज की खुशहाली स्त्रियों के खुशहाल जीवन पर निर्भर करती है क्योंकि स्त्री परिवार की धुरी होती है। स्वयं स्त्री खुशहाल रहेगी तो परिवार के अन्य जनों को भी खुशहाल रख पाएगी। स्त्री समाज में अनेक भूमिकाएँ निभाती है। जैसे – बेटी, बहन, पत्नी, माता और आदि शिक्षिका यानी की बच्चे की प्राथमिक गुरु एक माँ (स्त्री) ही होती है। इन सभी भूमिकाओं को निभाकर स्त्री मनुष्य के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इसलिए समाज में स्त्रियों के गौरव और सम्मान की रक्षा करना सभी लोगों का कर्त्तव्य है। रामराज्य में स्त्रियों को पुरुष की गुलाम नहीं अपितु अर्धांगिनी माना गया है। इस प्रकार कवि ने एक आदर्श राजतंत्र की विशेषताओं को प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत काव्य में कवि ने राजतंत्र का वर्णन किया है जिसमें राजा रामचन्द्र का शासन अयोध्य नगरी में कायम है। राजा रामचन्द्र सिंहासन पर बैठते समय एक घोषणापत्र पढ़ते हैं जिसमें राजा, प्रजा कर्मचारियों आदि सभी कर्त्तव्यों को निर्धारित किया गया है। इसमें आदर्श राजा विशेषताओं के चित्रण के साथ–साथ धूर्त राजा कर्मियों का भी उल्लेख किया गया है।

''प्रजाहितं प्रतिश्रुत्य धूर्तः साधयते न तत्।
सर्वंसहापि सहते न धरा तस्य शासनम्।।
न कर्ता केवलं वक्ता व्यवहर्ता न कर्मणाम्।
असत्यवादी दम्भी च न राजा किन्तु वञ्चकः।।''[7]

अर्थात् जो धूर्त राजा प्रजाहित की प्रतिज्ञा करके भी उसको पूरा नहीं करता, सब कुछ सहन करने वाली भूमि भी उसका शासन सहन नहीं करती। जो केवल वचन से प्रजाहित की बात करता है व्यवहार और कार्य से नहीं, वह असत्यवादी और धूर्त राजा नहीं अपितु प्रजा को ठगने वाला है।

इसमें कवि ने राजतंत्र में राजा के कर्त्तव्यों का उल्लेख किया है। यह विचार वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था पर भी लागू होता है जिसमें शासक वोट के लिए जनता से झूठे वादा करते हैं और सत्ता प्राप्ति के पश्चात् अपने वादों से मुकर जाते हैं।

वर्तमान राजनीति में झूठे, मक्कार और अवसरवादी नेताओं की भरमार हो गई है। सत्ताधारी लोगों में आई इस कमी को ध्यान में रखते हुए कवि ने तत्कालीन राजतांत्रिक व्यवस्था में राजा के कर्त्तव्यों का उल्लेख किया है। राजा अपनी प्रजा का एक रक्षक होता है। उसे प्रजा को ठगने की बजाए प्रजाहित के बारे में सोचना चाहिए। एक आदर्श राजा के वचन और कर्म में समानता होनी चाहिए। इस प्रकार प्रस्तुत काव्य में कवि ने आदर्श राजा का चित्रण करते हुए राजतंत्र की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। इसमें कवि ने राजा राम के घोषणा–पत्र को प्रस्तुत किया है जिसे पढ़ते हुए राम अपने गुरुओं और ऋषियों के समक्ष राजा के रूप में अपनी प्रजाहित के कार्य करने की प्रतिज्ञा करते हैं –

''तद्दायादोऽस्म्यहं रामः स्थापितो राज्य शासने।
भवद्भिः प्रतिजानेऽहं साक्षीकृत्य गुरु नृषीन।।
शरीरं बधवो दारा राज्यं कोषो बलं वयः।
चितं वित्तं च रामस्य धर्मायास्ति समर्पितम्।।
प्रजाहितं साधयिष्ये रक्षायिध्ये वसुन्धराम्।
न्यायस्य चापि धर्मस्य स्थापयिष्ये सुशासनम्।।''[8]

अर्थात् मैं गुरुओं और सत्यवादी ऋषियों को साक्षी मानकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि प्रजाहित के कार्य करके राम राज्य स्थापित करूँगा। आपके सम्मुख स्थित इस राज्य का शरी, बन्धुजन, स्त्री, राज्य, कोष, शक्ति, आयु, मन और धन सभी धर्म के लिए समर्पित हैं। मैं प्रजाहित के कार्य करूँगा, भूमि की रक्षा करूँगा। न्याय और धर्म का शासन स्थापित करूँगा।

इस प्रकार प्रस्तुत काव्य में राजा राम के घोषणा–पत्र के माध्यम से राजतंत्र में लोकतांत्रिक व्यवसथा को दर्शाया है। राजा राम तानाशाही न होकर प्रजाहित की बात करने वाले आदर्श राजा के रूप में उपस्थित होते हैं। वे सिंहासन पर आसीन होने से पहले अपने गुरुओं के समक्ष अपने उत्तरदायित्व के निर्वाह की प्रतिज्ञा लेते हैं। वे तन–मन–धन से अपनीप्रजा के प्रति समर्पित होने की प्रतिज्ञा लेते हैं। राजा राम के राज्य में व्यवस्था में प्रजा सर्वोपरि है न कि राजा। इस प्रकार कवि ने एक आदर्श राजतंत्र की स्थापना की है जो वर्तमान में भी प्रासंगिक एवं आवश्यक है।

सिंहासन पर आसीन होते समय राजाराम अपने दरबार में एक घोषणा–पत्र प्रस्तुत करते हैं जिसमें वे अपनी न्याय व्यवस्था एवं दण्ड विधान के बारे में बतलाते हैं कि –

''अनृती कपटी क्रूरो लुब्धः क्रोधी च हिंसकः।
चौरः प्रमादी कर्तव्ये दण्ड्यः प्राणैर्धनैश्च वा।।''[9]

अर्थात् झूठे, कपटी, क्रूर, लोभी, क्रोधी, जीव हिंसा करने वाला, चोर और अपने कर्त्तव्य में असावधान रहने वालाधन अथवा प्राणदण्ड का भागी होगा।

राजतंत्र में शासन को सुचारू रूप से चलाने के लिए दण्ड विधान का प्रावधान भी अनिवार्य होता है। प्रस्तुत काव्य में कवि ने राजा राम के घोषणा–पत्र के माध्यम से राजतंत्र में दण्ड विधान की अनिवार्यता को दर्शाया है। प्रस्तुत काव्य में केवल मनुष्यों को ही पशु–पक्षियों को भी न्याय की गुहार लगाने पर न्याय मिलता है जिसका उदाहरण 'कुत्ते' और 'उल्लू एवं गिद्ध' प्रकरण में देखा जा सकता है। राजा राम को एक न्याय प्रिय शासक के रूप में दर्शाया गया है। रामराज्य में सभी अपने–अपने कर्त्तव्यों एवं अधिकारों का पालन करते हैं। जहाँ कहीं भी किसी के अधिकारों का हनन होता है अथवा कर्त्तव्यों का उल्लंघन होता है स्वयं राजा राम उसका न्याय करते हैं।

राजतंत्र में न्याय व्यवस्था में पारदर्शिता का होना आवश्यक है। न्याय–व्यवस्था की खामियाँ कुशल शासन के लिए हानिकारक होती हैं। प्रस्तुत काव्य में कवि ने कैकेयी और राम के संवाद के माध्यम से दण्ड विधान के नियमों का चित्रण किया है –

''दण्डपात्रमपि दण्ड्यते यदा तस्य मन्तुमविचार्य शासकैः।
श्रेयसे भवति तत्र दाण्डिके नैव दण्ड्य उभयत्र दूषणम्।।''[10]

अर्थात् दण्डपात्र के अपराध के ठीक से न सुनकर यदि कोई अधिकारी दण्ड देता है तो दण्डनीय और दण्ड देने वाले शासक दोनों के लिए कल्याणकारी नहीं होता।

इस प्रकार न्याय प्रक्रिया में समाज में प्रचलित नियम–कानून व्यवस्था का पालन किया जाता है।

सभी के अधिकारों की रक्षा स्वयं राजाराम करते हैं। यदि कोई अपने कर्त्तव्यों का अनादर करता है तो उसे तर्क संगत ढंग से समझाया जाता है। प्रस्तुत काव्य में राजा राम द्वारा किसी भी अपराधी को प्राणदण्ड देते हुए नहीं दर्शाया है। 'शम्बूक प्रकरण' में भी राजा राम शम्बूक को समझाकर उसे उसके कर्त्तव्यों की याद दिलाते हैं। जबकि प्रचलित रामकथा में राम द्वारा शम्बूक को मृत्युदण्ड देते हुए दर्शाया गया है।

प्रस्तुत काव्य में कवि ने राजा राम के घोषणा–पत्र के साथ–साथ उसके

व्यावहारिक रूप से लागू होने का भी चित्रण किया है –

आदर्शभूपस्य गुणेषु भूयः प्रजासु सङ्क्रान्तिमुपागतेषु।
राजानुरूपा हि प्रजा भवन्तीत्याभाणकं सार्थकतां बभाज।।
गुरोर्वशिष्ठात् समवाप्तविद्यो नीतीस्तु राज्ये निरदीधरद्याः।
सान्दृष्टिकत्वेन हि तासु काश्चिदुदर्करम्याश्च बभुर्हि काश्चित्।।
नैवाग्निदाहात्र च तोयवृद्धेर्दुर्भिक्षतो वा गदसम्प्रसारात्।
नैवेतिजन्यं न च मारिकाया रामस्य राज्ये हि भयं बभूव।।
न सैनिकेभ्यो नृपसेवकेभ्यो न घातुकेभ्यो न च तस्करेभ्यः।
न वञ्चकेभ्यो न च शक्तिमद्भयो भयं प्रजानामभवत् कदाचित्।।
दृष्टादृष्टाच्च भयात्किलैवं मुक्ताः प्रजाः सर्वसुखानि भेजुः।
सम्प्राप्य दिग्दर्शनमात्मभूपादध्यात्मचिन्ताप्रवणा बभूवुः।।
धनुर्धराणां धुरि कीर्तनीये नरेश्वरे शास्तरि रामचन्द्रे।
राष्ट्रे विमुक्ते परचक्र भीतेस्त्रिवर्गसिद्धि स्वयमेव जाता।।''[11]

अर्थात् आदर्श राजा के गुण प्रजा में भी संक्रमित होने से राजा के अनुरूप ही प्रजा होती है। यह कहावत चरितार्थ हो रही थी। 'यथा राजा तथा प्रजा' महर्षि वशिष्ठ से विद्या प्राप्त कर श्रीराम ने प्रजाहित में जो नीति राज्य में सुनिश्चित की थी उनमें कुछ तत्काल तथा कुछ आगे आने वाले समय में फल देने वाली थी। रामराज्य में प्रजा को अग्निदाह, बाढ़, दुर्भिक्ष, रोग प्रसार, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि इतियों एवं महामारी फैलने का कोई भय नहीं था। सैनिक राजकर्मचारी, हिंसक, चोर और लुटेरे ठग तथा शक्तिशाली जनों से प्रजा को कोई डर नहीं था। उनके राज्य में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष भय से सर्वथा, मुक्त होकर प्रजा सभी सुखों का उपभोग करती थी। अपने राजा से निर्देश प्राप्त कर अध्यात्म का चिन्तन निरन्तर करती थी। धनुर्धारियों में सर्वश्रेष्ठ राजा राम के शासन में राष्ट्र इतर राजाओं का या शत्रुओं के आक्रमण भय से मुक्त ऐसे राज्य में धर्म, अर्थ, काम इन तीन पुरुषार्थों की प्रजा को स्वतः उपलब्धि थी।

इस प्रकार रामराज्य में सुखी प्रजा का चित्रण करके कवि ने राजतंत्र की महत्ता को स्थापित किया है। कवि द्वारा कल्पित राजतंत्र तानाशाही, प्रजा को कष्ट पहुँचाने वाला नहीं अपितु प्रजा के हित साधने वाला है। आदर्श राजा राम को प्रजा का हितैषी दिखाया है जो वर्तमान समय में भी अनुकरणीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ए. एल. बाशम, अद्भूत भारत, पृ.60
2. श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, दशम सर्ग, पृ.81
3. श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, प्रथम सर्ग / 1, 2, 3
4. श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, प्रथम सर्ग / 27, 28, 29
5. श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, प्रथम सर्ग / 72, 73
6. श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, प्रथम सर्ग / 90, 91
7. श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, प्रथम सर्ग / 100, 101
8. श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, प्रथम सर्ग / 110
9. श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, प्रथम सर्ग / 70
10. श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, तृतीय सर्ग / 69
11. श्री सत्यनारायण शास्त्री, श्रीरामाश्वमेधीयम्, षष्ठ सर्ग / 32, 33, 34, 35, 36, 37